IJARSCT
ISSN (Online) 2581-9429
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology (IJARSCT)
Volume 3, Issue 1, February 2023
Impact Factor: 7.301

मुगलकालीन भारत की वास्तुकला

डॉ. सुखेन्द्र सिंह
अतिथि विद्वान इतिहास विभाग
शासकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय, अमरपाटन, जिला सतना (म.प्र.)

मुगलकाल में वास्तु विन्यास को लेकर शुरू हुई परम्परा अकबर के काल में तो फलीभूत तो हुई परन्तु जहाँगीर शिल्पकला की अपेक्षा चित्रकारी और बागबानी में अधिक अभिरुचि रखता था, अस्तु उसके शासन काल में मुगल स्थापत्य कला में कोई विशेष उल्लेखनीय प्रगति नहीं हुई। फिर भी भवन निर्माण का कार्य पूर्ववत चलता रहा और सम्राट ने भी कुछ महत्त्वपूर्ण इमारतों का निर्माण करवाया। जिनकी शिल्प शैली की ईरानी–भारतीय परिदृश्य की रही। नक्काशी और रंग–विधान मूलतः ईरानी ही देखा गया पर भारतीय शिल्प विधान की अनदेखी नहीं हुई। जहाँगीर की कला प्रियता उसके वास्तुविन्यास में अन्तर्निहित चित्रकला का दिग्दर्शन कराती है। सिकन्दरा में अकबर को मकबरे का निर्माण कार्य यद्यपि अकबर की योजना के अनुरूप उसी के शासन काल में प्रारम्भ किया गया, इसका समापन 1613 ई० में जहाँगीर की देख रेख में हुआ। जहाँगीर के शासन काल में अन्य उल्लेखनीय भवन लाहौर के निकट शाहदरा में स्थित उसका मकबरा है जिसका नक्शा और योजना उसने स्वयं तैयार किया था। यह अकबर के मकबरे की लम्बाई–चौड़ाई के अनुपात में छोटा है। इस मकबरे के ऊपर संगमरमर का एक मंडप था जिसे सिक्खों ने इस पर अपने अधिकार के समय उतार लिया था। समाधि के भीतरी हिस्सा में संगमरमर की पच्चीकारी तथा चिकने और रंगीन प्रस्तरों का सुन्दर प्रयोग किया गया है। वस्तुतः इसे एक प्रभावशाली इमारत कहा जा सकता है।

संदर्भ स्रोत :–

[1].हरिश्चंद वर्माः मध्यकालीन भारत (खण्ड–2)मुगल समाज और संस्कृति पृ.–506

[2].अवधविहारी पाण्डेयः मध्यकालीन भारत (द्वितीय खण्ड) मुगल भारत पृ. 564

[3].अब्दुल इमीद'– लाहौरी : बादशाहनाम ई एण्ड डी vii पृ–113

[4].नीरज श्रीवास्तव : मुगल वास्तुकला : शैली एवं विशेषताए पृ.–135

[5].बी.ए. स्मिथः अकबर द ग्रेट मुगल पृ.–107

[6].सी. जे. बाउल : द क्वाएलन आफ इण्डिया पृ–81

[7].अबदुल इमीद लाहौरीः बादशाह नामा ई एण्ड डी vii–117

[8].वही पृ.–121